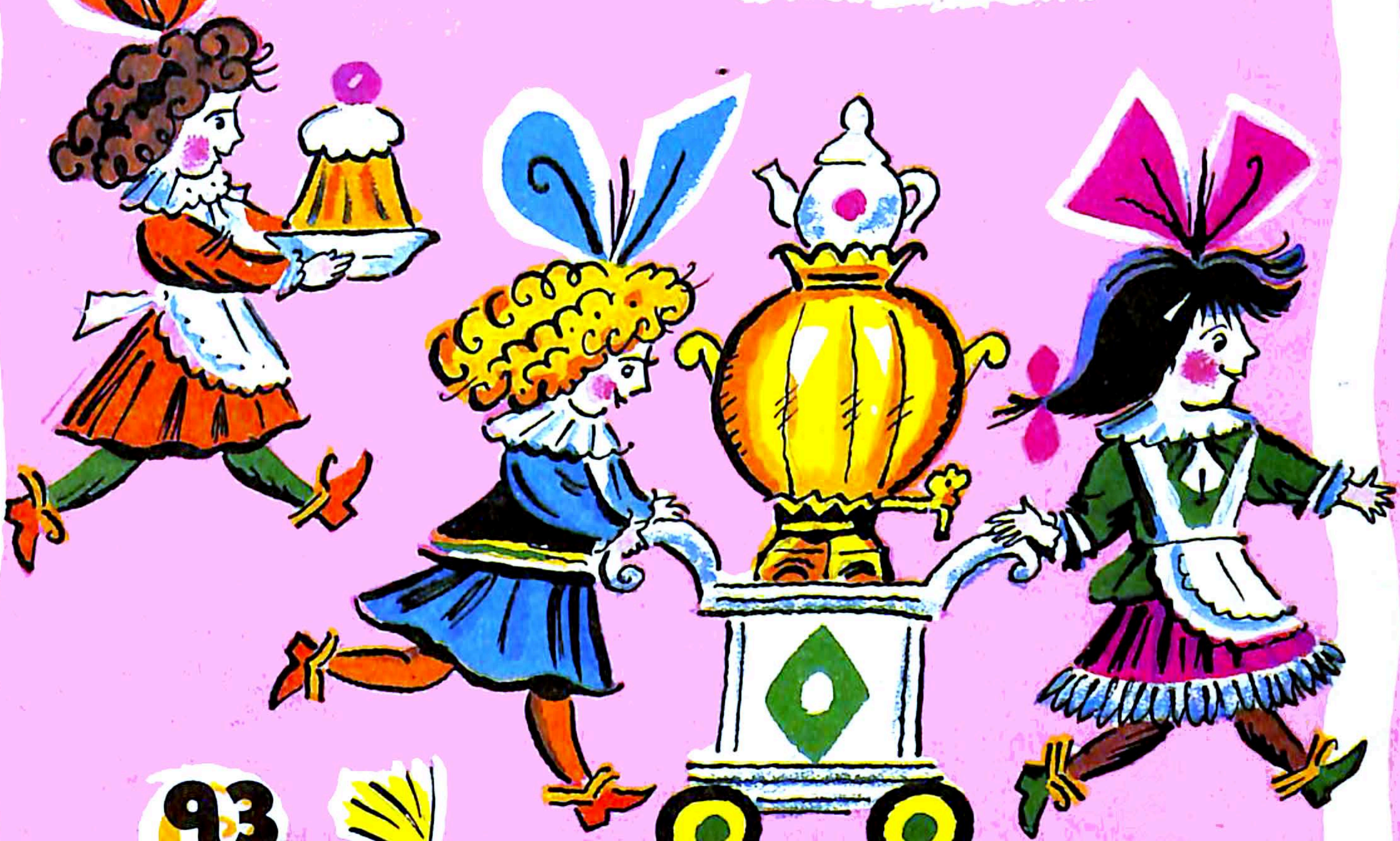
नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



१३



मेज़ पर गपशप

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नज़ानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

१३

मेज़ पर गपशप

अनुवादक:
संगमलाल मालवीय

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन

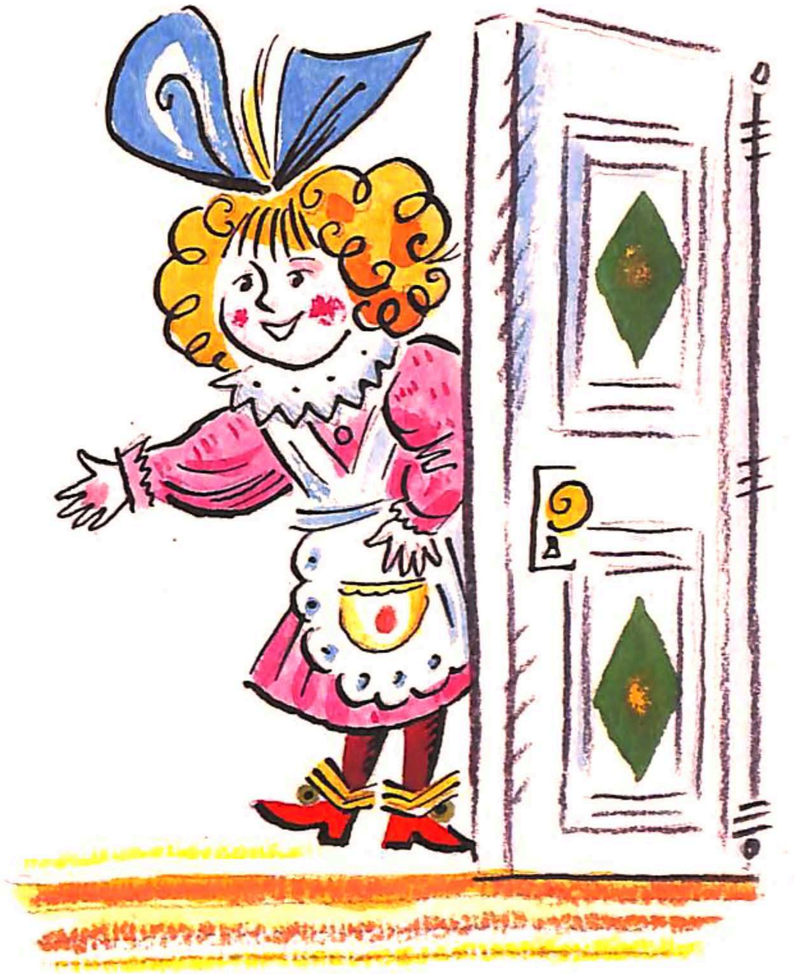


राद्गा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर 302001





नजानू ने झट से कपड़े पहने और लकड़ी की चरमराती सीढ़ियों पर चढ़कर दूसरी मंज़िल पर पहुंचा। यह कमरा नीचेवाले से छोटा, लेकिन ज़्यादा आरामदायक था। दो अर्धगोलाकार खिड़कियों पर ख़ूबसूरत परदे लहरा रहे थे। खिड़कियों के बीचवाला दरवाज़ा बरामदे की ओर खुलता था। कमरे के मध्य में एक मेज़ पर तरह-तरह की खाने की वस्तुएं – केक, पेस्ट्री, मुरब्बे, कचौरियां, अख़रोट वग़ैरह तश्तरियों में सजे हुए थे। तरह-तरह की चीज़ों से सजी मेज़ को देखते ही नजानू की नज़र फिसलने लगी।

इसी बीच सिर पर बंधे फूलदार रिबन और चोटियोंवाली छुटकियां चाय उड़ेल रही थीं। घुंघराले बालोंवाली छुटकी सेब की जेली लेकर आ रही थी। नीलाक्षी ने अपनी सहेलियों से नजानू का परिचय कराया। चोटियोंवाली छुटकी का नाम था श्वेता, रिबनवाली का – जेता और घुंघराले बालोंवाली छुटकी को मिट्ठू कहते थे। नजानू झट से मेज़ पर बैठना ही चाहता था कि दरवाज़ा खुला और कमरे में चार छुटकियां और आ पहुंचीं। नीलाक्षी ने इन सहेलियों का भी परिचय नजानू से कराया :

"और ये हैं हमारी पड़ोसिनें – डेज़ी, पिन्की, रोज़ा और मिली।" नीलाक्षी ने कहा।

नजानू अब तक छुटकियों से घिर चुका था।

"क्या आप ग़ुब्बारे में उड़कर यहां आए हैं?" श्यामकेशी मिली ने पूछा।

"बेशक, ग़ुब्बारे में," नजानू ने रौब मारते हुए कहा, लेकिन एक नज़र मेज़ पर थी।

"यूं उड़ने में आपको डर नहीं लगा?" मोटी-सी रोज़ा ने पूछा।

"ऐसा डर कि बस!.. अजी, नहीं, ज़रा भी नहीं!" नजानू ने जवाब दिया।

"आप कितने साहसी हैं! मैं तो किसी क़ीमत पर ग़ुब्बारे में न उड़-ती!" पिन्की ने कहा।

"कहां से आए हैं आप?"

"फूलनगर से।"

"कहां है यह नगर?"

"वहां," अनिश्चित दिशा में हाथ हिलाकर नजानू ने कहा। "खीरे-वाली नदी के किनारे।"

"मैंने तो इस नदी का नाम ही नहीं सुना," मिली ने कहा। "बहुत दूर होगी शायद?"

"बहुत दूर," नजानू ने सहमति प्रगट की।

"आइए, बैठिए, चाय ठण्डी हो रही है," नीलाक्षी ने मेहमानों से कहा।

नजानू को दुबारा याद दिलाने की ज़रूरत न पड़ी। पलक झपकते ही वह मेज़ पर बैठ गया। और देखते ही देखते केकों, पेस्ट्रियों और बिस्कुटों की शामत आ गई। नजानू इन्हें ठूंस-ठूंसकर मुंह में भरने लगा। लेकिन छुटकियों ने सिर्फ़ मुंह जूठा कर लिया। वे तो नजानू से ग़ुब्बारे के बारे में ढेर-सी बातें जानने की इच्छुक थीं।

"आख़िर इस ग़ुब्बारे का आविष्कार किसने किया?" मिट्ठू ने पूछा।

"मैंने!" जल्दी-जल्दी जबड़े चलाते और मुंह में ठूंसी केक को ख़त्म करते हुए नजानू ने कहा।

"आप क्या कह रहे हैं?! सचमुच आपने ही?" सारी छुटकियां उसके और क़रीब आ गईं।

"हां, हां, यक़ीन करें! क़सम खाता हूं!" नजानू ने अस्पष्ट स्वर में कहा – उसके गले में केक अटक जो गयी थी।

"अहहा! कित्ते मज़े की बात है! कृपया विस्तार से सुनाइए न। कैसे हुआ यह सब?" रोज़ा ने पूछा।

"अरे, इसमें सुनाने की बात ही क्या है?" नजानू ने कंधे उचकाते हुए कहा। "सीधी-सादी बात है। बहुत दिनों से हमारे यहां के छुटके तंग



करते थे कि मैं कोई नया आविष्कार करूं। अक्सर वे कहते: 'भाई! कुछ सोचिए न, अक़्ल दौड़ाइए न?' और मैं कहता: 'भाइयो, मैं ऊब चुका हूं। ख़ुद ही सोचो, अक़्ल दौड़ाओ।' वे कहते: 'यह आप क्या कहते हैं? हमारी अक़्ल तो चरने गई है। एक आप ही बुद्धिमान हैं।' 'ठीक है,' मैंने कहा, 'कुछ करना ही पड़ेगा।' और मैंने सोचना शुरू किया।"

नजानू ध्यानमग्न-सा पेस्ट्री खाने लगा। छुटकियां अधीरता से उसे देख रही थीं। जब यह पेस्ट्री ख़त्म हो गई तो उसने एक और पेस्ट्री की ओर हाथ बढ़ाया। इस बार श्वेता ने ख़ामोशी तोड़ते हुए कहा:

"तो आप कह रहे थे कि... 'मैंने... सोचना शुरू किया!'"

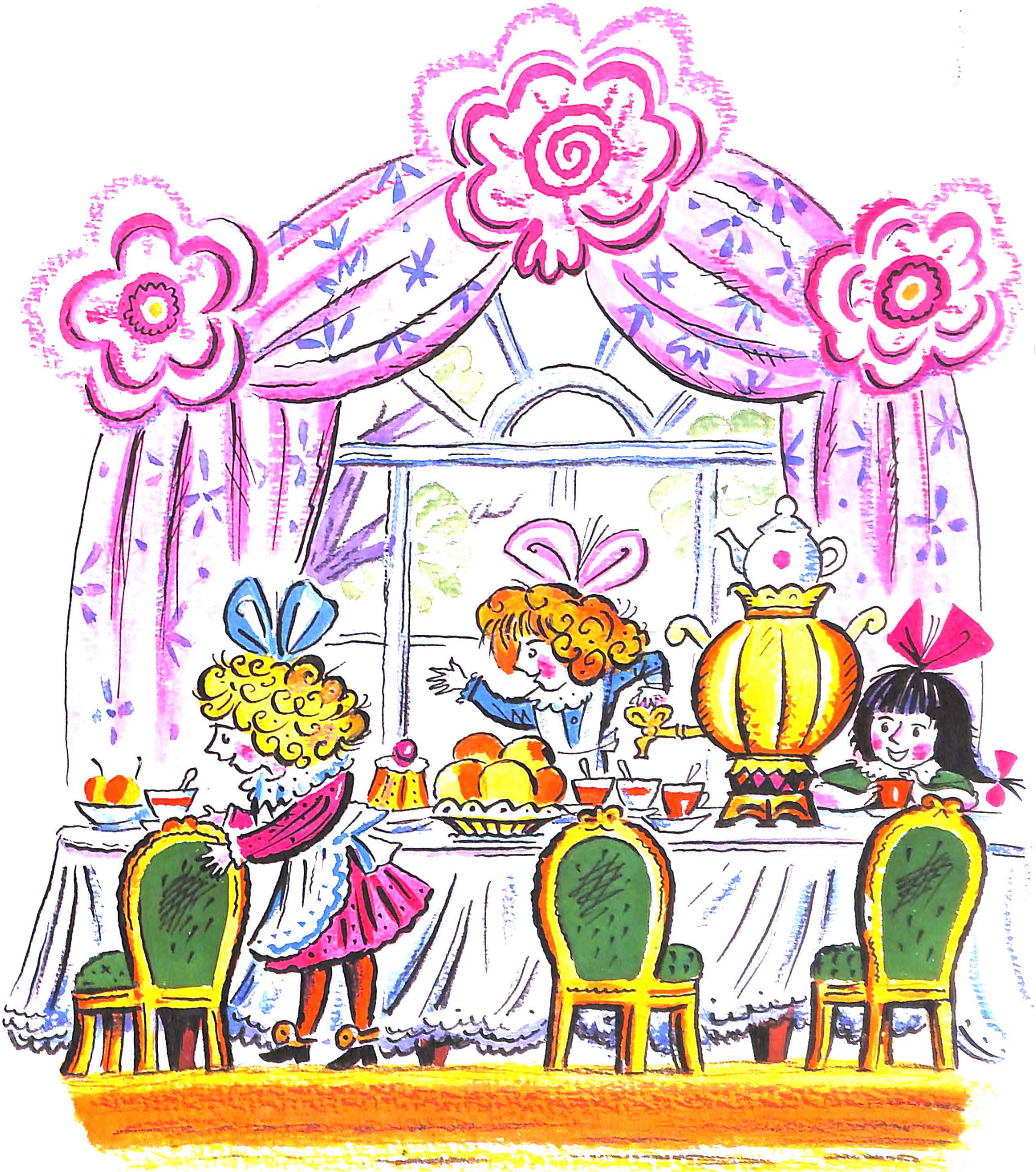
"हां!" उसने कहा मानो स्वप्न से जागा हो, पेस्ट्री मेज़ से टकराई। "इस तरह मैं तीन दिन, तीन रात बस सोचता ही रहा और लो, सोच निकाला! तब मैंने दोस्तों से कहा: 'भाइयो, अब काम का वक़्त आ गया है। मैं एक गुब्बारा बनाऊंगा।' और हमने मिल-जुलकर गुब्बारा बना डाला। हमारे फूलनगर के एक विख्यात कवि गुलदस्ता ने एक कविता भी लिखकर मुझे समर्पित की थी: 'नजानू ने गुब्बारा बनाया...' या शायद: 'गुब्बारा नजानू ने उड़ाया...' या 'गुब्बारा नजानू ने बनाया, गगन में लहराया'। ख़ैर, मारो गोली उस कविता को! लो, मैं भूल ही गया। अजी, मेरे बारे में तरह-तरह की कविताएं लिखी जा रही हैं—कहां तक याद रखूं उन्हें?"

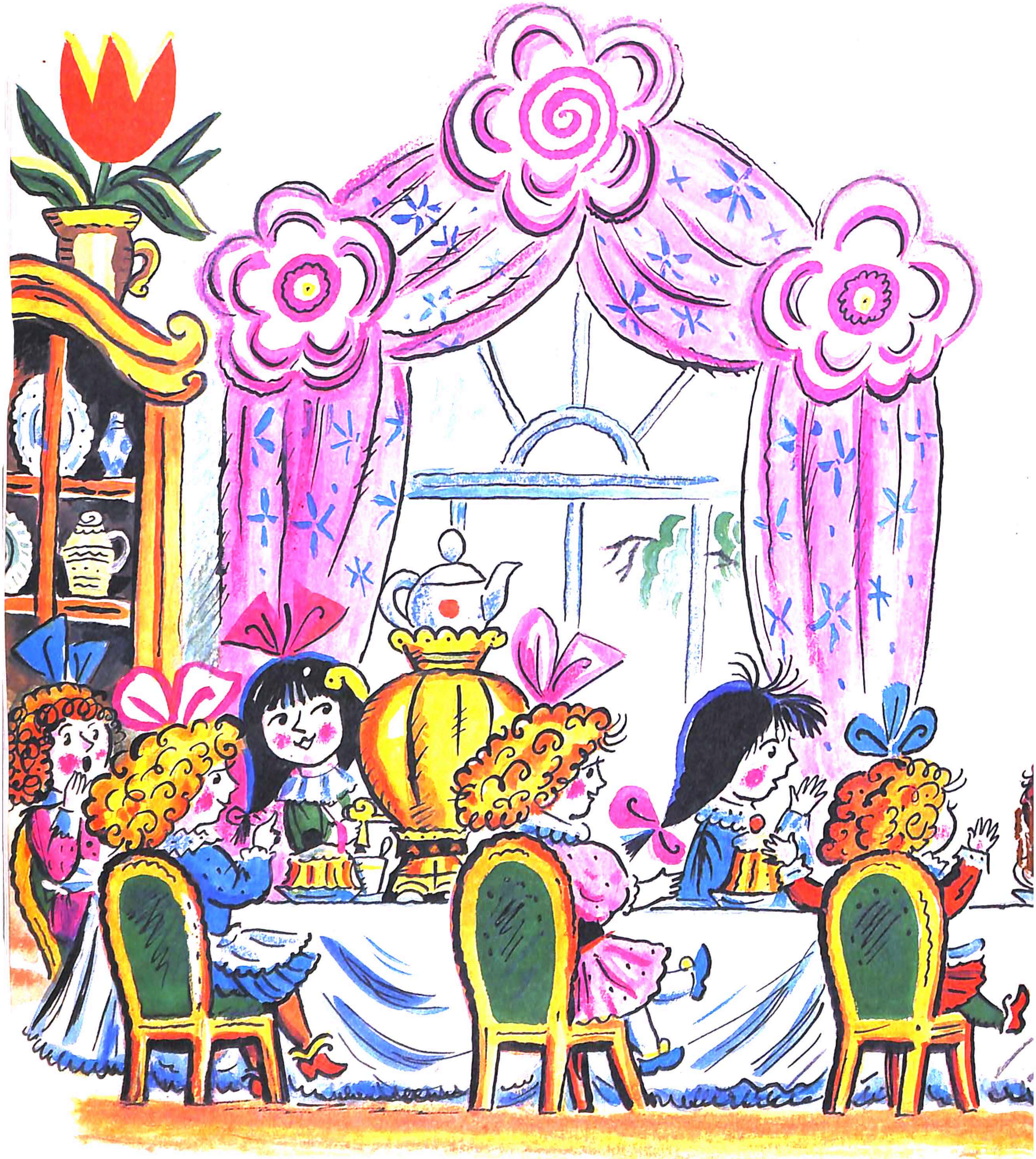
नजानू ने एक और पेस्ट्री उठाई।

"लेकिन आपने गुब्बारा कैसे बनाया?" नीलाक्षी ने पूछा।

"अजी, वह काम बड़ा विकट था। हमारे नगर के सारे छुटके दिन-रात गुब्बारा बनाने में ही जुटे रहे। कुछ लोग रबर का रस मल रहे थे,





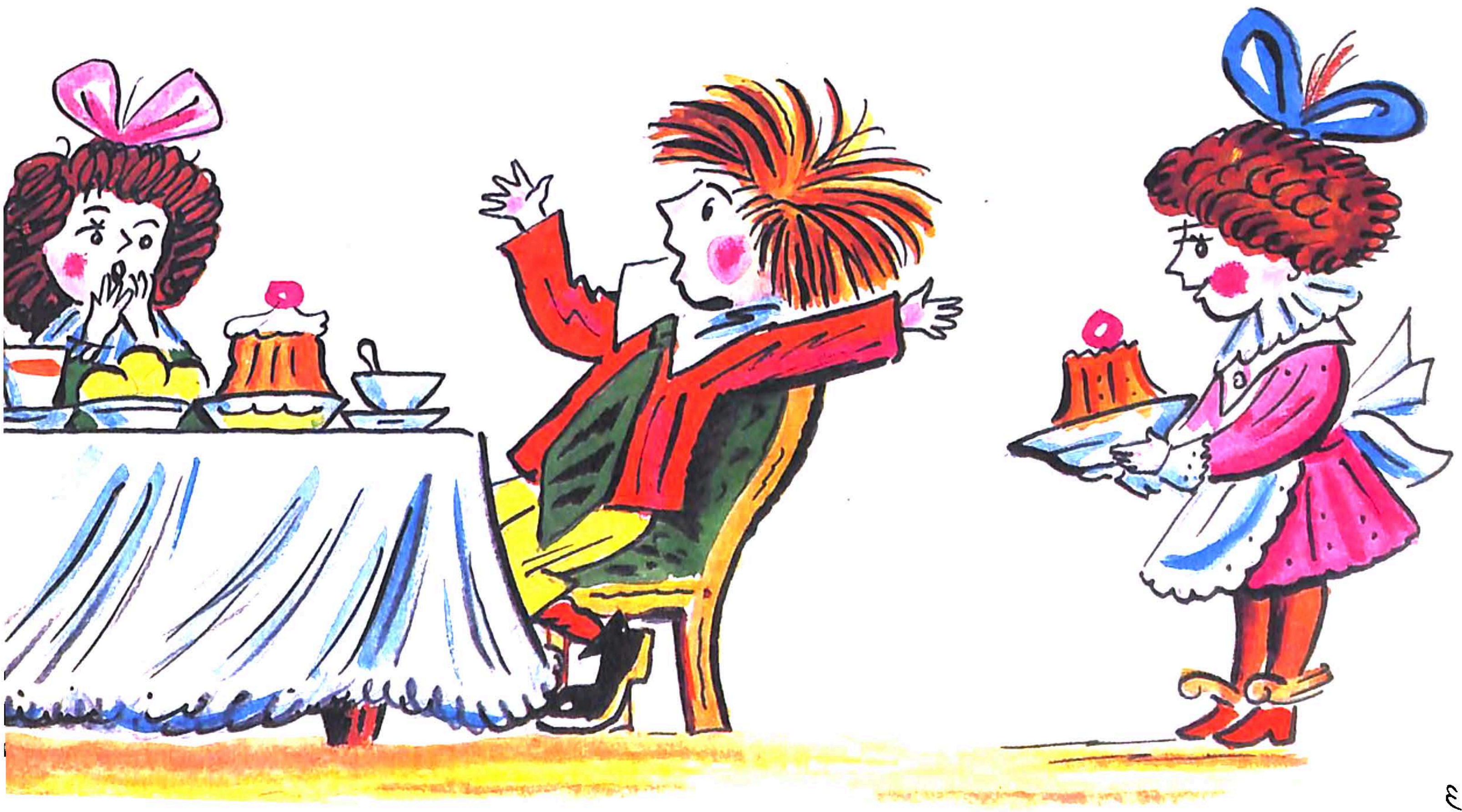


कुछ लोग पम्प से हवा भर रहे थे और मैं बस सीटियां बजाता घूम रहा था। आप इसे सिर्फ़ सीटियां बजाना ही न समझें, मैं हरेक का काम देख रहा था, समझा रहा था, आदेश दे रहा था... वहां मेरे सिवा किसी को कुछ पता न था। ज़रूरत पड़ने पर ख़ुद ही करके दिखाना पड़ता था। बड़ी ज़िम्मेदारी का काम था, गुब्बारा किसी वक़्त फट सकता था। हां, मेरे दो सहायक भी थे: मोड़ू और पेंचू। ग़ज़ब के कारीगर थे। पीर, बवर्ची, भिश्ती, खर – क्या नहीं थे वे! पर उनकी अक़्ल कम चलता था। हर चीज़ उन्हें करके दिखानी-समझानी पड़ती थी। मैंने उन्हें बॉयलर बनाना सिखाया। और देखते ही देखते बॉयलर बनकर तैयार हो गया: बॉयलर में पानी खद-बदाने लगा, भाप उड़ने लगी। लोग मुंह बाए खड़े रह गए।"

छुटकियां बड़े ध्यान से यह सारा क़िस्सा सुन रही थीं।

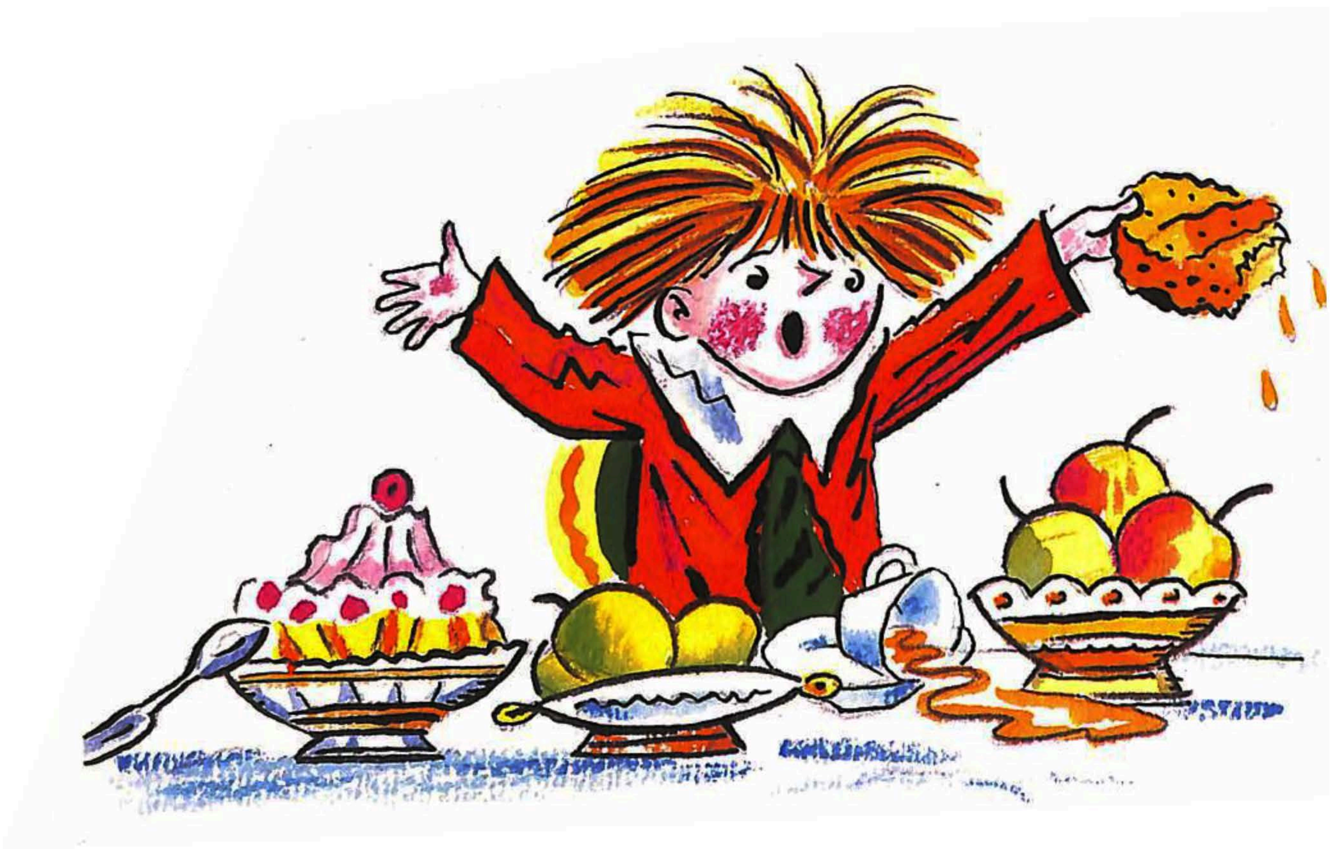
"फिर क्या हुआ? आगे क्या हुआ?" नजानू के चुप होते ही सभी एक साथ बोल पड़ीं।

"आख़िर उड़ान का दिन आ ही गया," नजानू सुनाता गया। "हज़ारों बौने वहां इकट्ठे हो गए। कुछ छुटके कहते कि गुब्बारा ज़रूर उड़ेगा, लेकिन कुछ कहते कि उड़ ही नहीं सकता। और इसी प्रश्न पर हंगामा हो गया। अजी, घमासान युद्ध छिड़ गया। वे, जिन्होंने कहा कि गुब्बारा उड़ेगा,



उनकी मुक्कों से ख़बर लेने लगे, जिन्होंने कहा था कि गुब्बारा नहीं उड़ेगा। और जिन्होंने कहा था कि नहीं उड़ेगा, वे उड़ान के समर्थकों के छक्के छुड़ाने लगे। या नहीं... शायद मामला उलट गया था। यानी कि जो यह कहते कि गुब्बारा उड़कर रहेगा, वे ही उड़ान के विरोधियों की ख़बर लेने लगे... या ऐसा लगता है कि मामला कुछ और ही था... ज़रा संक्षेप में कहें तो ऐसा हंगामा था, ऐसी भगदड़ थी कि पता ही न चला कि कौन किसे पीट रहा है। सभी एक दूसरे पर मुक्के चला रहे थे।"

"ख़ैर, छोड़िए भी इस झगड़े को!" नीलाक्षी ने कहा। "आप लड़ाई-झगड़े के बारे में न बताएं, गुब्बारे की उड़ान का ही क़िस्सा सुनाएं! हां,



तो फिर आगे क्या हुआ?"

"वही तो मैं बताने जा रहा था," नजानू ने कहा। "हां, तो जब वे लड़ते रहे, हम झपटकर गुब्बारे के झाबे में सवार हो गए। उड़ान से पहले मैंने एक छोटा-सा भाषण दिया: 'भाइयो, अलविदा, हम उड़ रहे हैं!' और हम उड़ लिए। और इत्ती ऊपर पहुंच गए कि ज़मीन इस कचौरी-सी दिखने लगी।"

“यह नहीं हो सकता!” छुटकियों ने अविश्वास प्रगट किया।

“अरे बाबा, मेरा बेड़ा ग़र्क़ हो जाए, अगर मैं झूठ बोलूं,” नजानू ने कहा।

“कृपया, बीच में मत बोलिए,” नीलाक्षी ने मायूस होकर कहा। “आप लोग टोकिए नहीं, भला वह झूठ क्यों बोलेगा।”

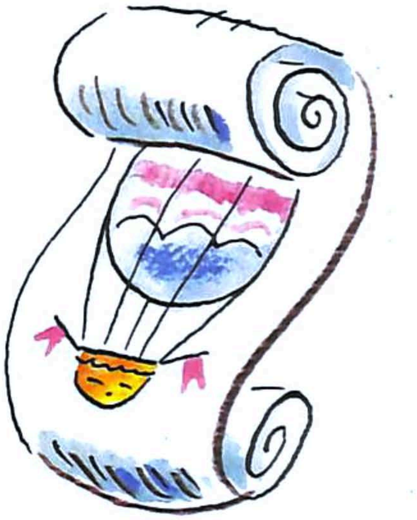
“अजी,” नजानू ने कहा, “मुझे गप मारने से रोकिए नहीं... यानी कि... छि...! सच बोलने से रोकिए नहीं। बस, सुनते रहिए।”

“सुनाइए! सुनाइए!” वे एक साथ चिल्लाईं।

“हां, हम लोग ऊपर ही ऊपर उड़ते रहे,” नजानू ने कहा। “अचानक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी: फटाक! हम लोग बादल से जा टकराए। गुब्बारा वहीं थम गया। अब क्या किया जाए?.. मुझे सोचने में ज़्यादा देर न लगी। हमने झट से अपना कुल्हाड़ा निकालकर बादल में सूराख़ कर डाला और फिर ऊपर उड़ने लगे। अचानक हमने देखा कि हम पैर ऊपर किए उड़ रहे हैं: आसमान नीचे और ज़मीन ऊपर! अजीब नज़ारा था।”

“आख़िर ऐसा क्यों?” छुटकियों ने आंखें फाड़ते हुए कहा।

“अजी, प्रकृति का नियम है,” नजानू ने समझाया। “बादलों के पार सदैव पैर ऊपर करके उड़ते हैं। इस तरह हम ऊपर ही ऊपर उड़ते रहे और ख़ूब ऊंचाई पर पहुंच गए। ग़ज़ब की ठंड थी। वहां का तापमान शून्य से एक हज़ार दशमलव एक डिग्री कम था! सब ठिठुर गए थे। गुब्बारा ठंडा होकर गिरने लगा। लेकिन मैं कोई मामूली विशेषज्ञ तो था नहीं। मैंने गुब्बारे की उड़ान















से पहले ही रेत की बोरियां झावे में रखवा दी थीं। हम उन्हें नीचे फेंकने लगे। फेंकते रहे, फेंकते रहे—इस तरह सभी बोरियां नीचे फेंक दी गईं। अब क्या किया जाए? हमारे बीच में एक छुटका था। उसका नाम था जानू। वह बड़ा डरपोक था। जब उसने गुब्बारे को नीचे गिरता देखा तो लगा चीखने-चिल्लाने। और अचानक पैराशूट लेकर गुब्बारे से कूद गया। इसके बाद झाबा हलका हो गया और गुब्बारा ऊपर उड़ने लगा। लेकिन ज़्यादा देर तक न उड़ा। फिर से गिरने लगा, ज़मीन की तरफ़ खिंचता गया। ज़मीन पर टप्पे खाता, लहराता ज़मीन से आ टकराया... और एक अदद मैं गिर पड़ा धड़ाम से। वह भी सिर के बल..."

अपनी कहानी सुनाते हुए नजानू इतने जोश में आ गया कि उसने एक भरपूर मुक्का कचौरी पर दे मारा। अंदर भरा हुआ मुरब्बा चारों ओर बिखर गया। छुटकियां चौंककर अपनी कुर्सियों से गिरते-गिरते बचीं।

सन्नाटा छा गया। सभी छुटकियां नजानू को आश्चर्य से देख रही थीं। उनके हृदय में नजानू के प्रति आदर का भाव था। उनकी नज़र में वह एक सच्चा सूरमा था।

"भाई, फिर क्या हुआ?" जरा संभलने के बाद उन्होंने पूछा।

"बस इतना ही याद है मुझे।"

अन्त में नीलाक्षी ने कहा:

"हम तो आपके उड़न-गुब्बारे से बहुत डर गए थे। कल शाम को हम लोग बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। अचानक हमने देखा कि एक बहुत बड़ा गुब्बारा हमारे घर की ओर उतरता चला आ रहा है। लेकिन वह अचानक चहारदी-

वारी से टकराया। फटाक! गुब्बारा फट गया और जब हम दौड़कर उसके पास पहुंचे तो देखा कि भोजवृक्ष की छाल का बना एक झाबा वहां पड़ा है।"

"और आप ज़मीन पर निर्जीव-से पड़े थे," जेता ने बात आगे बढ़ाई।

"एक जूता आपके पैर में था, दूसरा चहारदीवारी पर और हैट पेड़ की टहनी पर झूल रहा था," श्वेता ने कहा।

"आपकी जैकेट की आस्तीन फट गई थी और आज सुबह ही वह हमें मिली है।" मिट्ठू ने कहा। "उसे जल्दी से जल्दी सिलना पड़ा।"

"मुझे यहां कौन लाया?" नजानू ने पूछा।

"हम लोग। आखि़र आपको रात में बाहर तो छोड़ नहीं सकते थे," नीलाक्षी ने कहा।

"आप मृतप्राय थे, मामूली-सी सांस चल रही थी," जेता ने फिर अपनी बात जोड़ दी। "लेकिन मधुरिमा ने कहा कि जान वापस लौट आए-गी, क्योंकि आपका जिस्म ... क्या कहते हैं उसे ... फौ-ला-द का बना है।"

"हां, फौलाद ही समझें, लेकिन मेरी खोपड़ी तो और भी मज़बूत है," नजानू ने ज़रा और शेख़ी बघारते हुए कहा। "मेरी जगह कोई और होता तो मस्तिष्क-व्याघात हो चुका होता।"





"अजी, व्याघात नहीं, आघात," नीलाक्षी ने नजानू की ग़लती सुधारते हुए कहा।

"लेकिन आपने कहा था कि उड़ान के समय गुब्बारे में आप अकेले न थे," नीलाक्षी ने पूछा।

"बेशक अकेला न था। हम सब सोलह यात्री थे। सच है कि डरपोक जानू छलांग लगा गया, इस तरह बाक़ी बचे पंद्रह!.."

"वे सब कहां हैं?" मिली ने पूछा।

"पता नहीं," नजानू ने कहा। "तो क्या झाबे में मेरे अलावा कोई और नहीं था?"

"वहां तो सिर्फ़ रंग का एक डिब्बा और मेडिकल बॉक्स ही मिला था।"

"रंग का डिब्बा तो ट्यूबेश का है और मेडिकल बॉक्स डाक्टर टिकियावाला का," नजानू ने कहा।

इसी समय दरवाज़ा खुला और कमरे में तुषारिका ने प्रवेश किया।

"कुछ सुना आपने?" वह ज़ोर से चिल्लाई। "एक नई ख़बर है। एक और गुब्बारा धरती पर उतरते ही फट गया। उस पर चौदह छुटके सवार थे। वे कल शाम को नगर के किनारे गिर पड़े थे। हमारी छुटकियों ने आज सवेरे ही उन्हें देखा था। वे अस्पताल में भर्ती किए जा चुके हैं।"

"क्या वे सभी घायल हैं?" आह भरते हुए श्वेता ने कहा।

"घबराने की बात नहीं," तुषारिका ने शांत स्वर में जवाब दिया। "मधुरिमा ने कहा है कि वे सभी ठीक हो जाएंगे।"

"वे मेरे दोस्त ही होंगे!" नजानू ने कहा। "इसी समय मुझे अस्पताल जाना होगा। तभी सारा हाल मिल पाएगा।"

"चलो, मैं भी आपके साथ चलती हूं," नीलाक्षी ने कहा।

"और मैं भी," तुषारिका ने कहा।

इसी समय उसकी नज़र नीलाक्षी के माथे पर चिपके गोलाकर प्लास्टर पर पड़ी: "अहा, तुम्हारे माथे पर कित्ता ख़ूबसूरत घेरा है। हाय, तुम पर तो ख़ूब फब रहा है। कोई नया फ़ैशन है क्या? शायद, ऐसा मैं भी अपने लिए बनाऊंगी।"

"नहीं," नीलाक्षी ने कहा। "यह तो प्लास्टर है। दरवाज़े से माथा टकरा गया था।"

"तो यह बात है..." तुषारिका ने मायूसी से कहा।

क्षण भर में कमरा ख़ाली हो गया। हरेक अपने पड़ोसियों को यह गरमा-गरम ख़बर बताने दौड़ पड़ा।

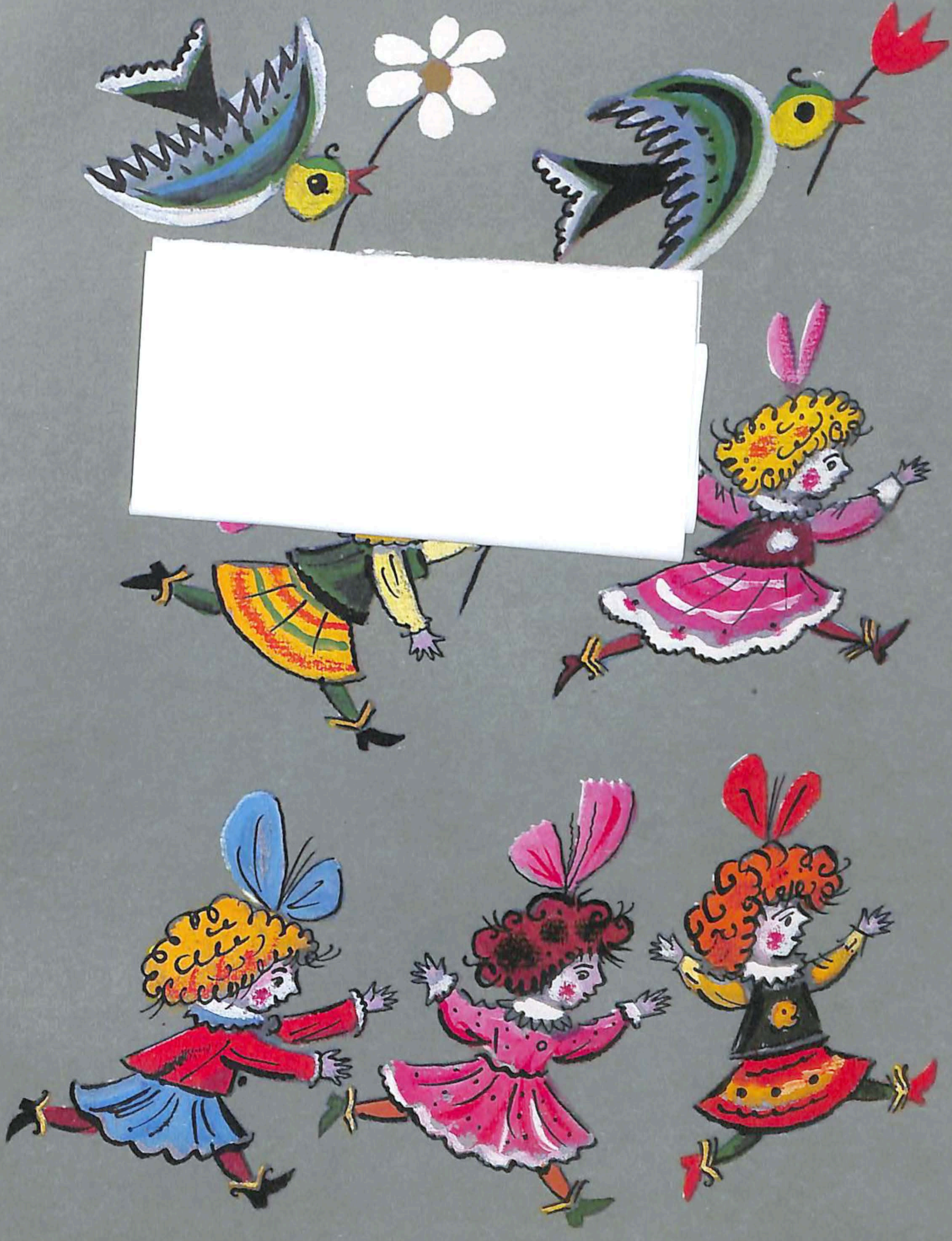


Н. Носов
РАЗГОВОР ЗА СТОЛОМ
На хинди

N. Nosov
DUNNO TELLS OF HIS ADVENTURES
In Hindi



© हिन्दी अनुवाद ० चित्र ० रादुगा प्रकाशन ० १९८८ सोवियत संघ में प्रकाशित





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इस पुस्तक में पढ़ सकते हैं:

नगर की सैर

ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-002110-3